VOL- X | ISSUE- I | JANUARY | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

मनीष शर्मा
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
राजकीय मेडिकल कॉलेज, पटियाला

सारांष :

प्राचीन काल से लेकर अब तक पुस्तकालयों का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। आज पुस्तकालय में संग्रहित पुस्तकें सजावट के लिय नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गों के उपयोग के लिये उपलब्ध है। पुस्तकालयों के तीव्र विकास के लिये समाज के सभी वर्गों को आगे आना चाहिये, विषेषकर पुस्तकालय से संबंधित छात्रों, अध्यापकों एवं अन्य कर्मचारियों तथा पुस्तकालय संगठनों को। आधुनिक पुस्तकालय ज्ञान एवं सूचनाप्रद सामग्री का अधिग्रहण करके उनको इस तरह व्यवस्थित करें ताकि सूचनाओं एवं ज्ञान का अधिकतम उपयोग हो सके। पुस्तकालय न केवल पाठनीय सामग्री से भरपूर होने के साथ-साथ पुस्तकालय भवन भी सुविधा सम्पन्न होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों तथा पाठकों एवं प्रौद्योगिकीय का प्रयोग करके पुस्तकालयों को सदैव उन्नत बने रहना जरूरी है।

पृष्ठभूमि :

पुस्तकालय का तात्पर्य ऐसे जगह से हैं जहाँ पुस्तकों को वैज्ञानिक ढंग से संग्रहित किया जाता है। प्राचीन काल में पुस्तकालय का स्वरूप तथा भूमिका एक संग्रहालय के रूप में थी। पुस्तकालय में संग्रहित पुस्तकें मात्र पुस्तकालय की शोभा बढ़ातीथी तथा आम जनमानव के पहुँच से बाहर थी। समय बीतने के साथ-साथ परिस्थितियों में परिवर्तन आया।

डॉ. रंगनाथन ने पुस्तकालय के ५ मूल सूत्र का प्रतिपादन किया उसमें से प्रथम सूत्र ''पुस्तकें उपयोग के लिये है।'' से पुस्तकों को जनसामान्य तक पहुँच हो सके, इसका समर्थन करता है। सिन्धुघाटी की सभ्यता से मिले प्रमाणों के आधार पर कहाँ जा सकता है कि प्राचीन समय में षिलालेख आदि भण्डार के लिये भण्डार गृह बनाये गये थे। १९वीं एवं २०वीं शताब्दी में पुस्तकालय का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। इस समय केवल शैक्षणिक संस्थाओं में पुस्तकालयों की अनिवार्यता को लागू करने के साथ-साथ सार्वजनिक पुस्तकालयों की भी स्थापना की गई। हमारे देष के राज्यों में पुस्तकालय अधिनियम पारित होने से पुस्तकालयों का प्रचार-प्रसार बढ़ता ही गया। गाँवों में सार्वजनिक पुस्तकालय खुलने के पीछे भी। पुस्तकालय अधिनियम है। राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेषन का भी सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास में सराहनीय योगदान रहा है। शैक्षणिक पुस्तकालय के विकास के लिये विष्वविद्यालय अनुदान आयोग ने १९५७ में डॉ. आर.एस. रंगनाथन की अध्यक्षता में पुस्तकालय समिति की स्थापना की। तद्परान्त १९६४-६६ में 'विष्वविद्यालय अनुदान आयोग ने' कोठारी आयोग की स्थापना की, इस आयोग की सबसे महत्वपूर्ण सिफारिष यह थी कि ''विकासषील विभाग के लिये, अपने पुस्तकालयों के गठन व अत्याधुनिक बनाने के लिये अधिक अनुदान दिया जाना चाहिये।

पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता :

जागरूकता का अर्थ किसी विषय में सचेत या चौकन्ना होने की स्थिति का भाव अर्थात् किसी भी विषय का ज्ञान और उसी विषय के ज्ञान के ऊपर निरन्तर चौकन्ना रहना ही जागरूकता होती है। हम यहाँ पर स्नातक स्तर पर पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता की बात कर रहे है। पुस्तकालय संसाधनों के बारे में जागरूकता का अर्थ हैं, संसाधनों के अस्तित्व का ज्ञान। पुस्तकालय संसाधनों का यह ज्ञान एक पुस्तकालय उपयोगकर्त्ता को विषेष पुस्तकालय और उसके उपयोग करने में सक्षम बनाता है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में ''पुस्तकालय जागरूकता''

शब्द एक नवीन अवधारणा है, जो आधुनिक समाज को पुस्तकालयों से जोड़ने पर बल देता है। पुस्तकालयों से अपरिचित लोगों को पुस्तकालयों के प्रति जागरूक कर उन्हें पुस्तकालयों से जोड़ने का कार्य भी करता है और पुस्तकालयों की समस्त प्रकार के सेवाएँ उपलब्ध कराते है। पुस्तकालय जागरूकता दो शब्दों से मिलकर बना है, पुस्तकालय जागरूकता अर्थात् पुस्तकालय का अर्थ होता है कि जहाँ विविध प्रकार के ज्ञान, सूचना, स्त्रोतों और सेवाओं का संग्रह होता है,वहीं जागरूकता से अभिप्राय जो व्यक्ति इससे परिचित नहीं हो, उन्हें जागरूक करना है। पुस्तकालय जागरूकता एक अभियान के तौर पर एक नवीन अवधारणा है जो समाज के व्यक्तियों को पुस्तकालय से जोड़ने का कार्य करता है। इसका उद्देष्य समाज के लोगों को निरक्षर बनाना पठन-पाठन की अभिरूचि जागृत करना है। एक जागरूकता अभियान चलाकर नुक्कड़ सभाएँ, नाट्य, मचंन, सेमीनार, कार्यषालाओं और आमसभा आदि आयोजित कर पुस्तकालय के प्रति जागरूकता अभियान। यहाँ पर हम स्नातक स्तर पर पुस्तकालय विज्ञान की जागरूकता का अध्ययन करेंगे।

स्नातक स्तर का अभिप्राय :

स्नातक स्तर का मतलब है कि विद्यार्थियों प्राथमिक स्तर और माध्यमिक स्तर की पढ़ाई पूरी कर चुका है, लेकिन उसका ज्ञान वही तक पूरा नहीं होता है। उसे समाज में और आगे बढ़ने के लिये विभिन्न तरह के ज्ञान, सूचनाये और सरकारी योजनाओं को जानना एवं समझना होगा। स्नातक स्तर पर विद्यार्थी किषोरावस्था से युवावस्था में प्रवेष करता है। वह कुछ सीखने, करने तथा जिज्ञाषु प्रवृत्ति का होता है। इस स्तर पर अगर उसे पुस्तकालय में विभिन्न तरह के ज्ञान प्राप्त हो जाये तो उसकी जिज्ञाषा शान्त हो जायेगी। सबसे पहले जागरूकता के माध्यम से उसके अन्दर पुस्तकालय विज्ञान के प्रति रूचि पैदा करके इच्छा जगानी चाहिये। वर्तमान समय में तकनीक के दौर में युवाओं की पसन्द पुस्तकालय बनती जारही है। जब भी आप एक अच्छी किताब पढ़ते है, तो कहीं न कहीं दुनिया में आपके लिए रोषनी का एक नया दरवाजा खुलता है। लाइब्रेरी आज युवाओं की पहली पसंद बनी हुई है। पुस्तकालय युवाओं के लिये धरोहर होती है।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व :

वर्तमान परिपेक्ष्य में स्नातक स्तर पर पुस्तकालय विज्ञान की जागरूकता की आवष्यकता तथा महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। आवष्यकता इसलिये है क्योंकि यह समय की मांग है और इसीलिये इसका विषेष महत्व भी है। व्यक्ति विविध क्षेत्रों से संबंधित ज्ञान एवं सूचना प्राप्त करना चाहता है। आज वह बहुआयामी और नवीनतम् सूचनाओं को वैज्ञानिक विधि पर आधारित मानदण्डों के आधार पर प्राप्त करना चाहता है, जिससे पुस्तकालय विज्ञान और उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं के प्रति आमजनमानष की जिज्ञाषा बढ़ती ही जा रही है। स्नातक स्तर का विद्यार्थी अब अपने शैक्षिक पूर्णता एवं दक्षता के अत्यंत निकट होता है। आगे चलकर वह समाज का एक सषक्त सदस्य बनकर राष्ट्र के उत्थान एवं प्रगति में योगदान देने के साथ-साथ स्वस्थ एवं सुसंगठित समाज के निर्माण में भी अपनी अहम् भूमिका अदा करेगा। इसलिये पुस्तकालय विज्ञान के अध्ययन की महत्वता अत्यंत अधिक है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा :

प्रस्तुत शोध कार्य की पृष्ठभूमि से संबंधित साहित्य की समीक्षा करना आवष्यक है। वर्तमान शोधकार्य के परिप्रेक्ष्य में यह ज्ञात कर अवलोकन कर लेना आवष्यक है कि इस क्षेत्र में कितने अनुसंधान कार्य हो चुके है तथा यह ज्ञात करना भी जरूरी है कि इनके परिणाम क्या प्राप्त हुये। समीक्षा से पूर्व में हुये शोधकार्यों की अच्छाइयों और कमियों का जानने का अवसर प्राप्त होता है।

चन्द्र, विकास (२०१८) ने पुस्तकालय सूचनासेवाओं की प्रसार में सोषल मीडिया की भूमिका नामक शीर्षक पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। प्रस्तुत शोध के लिये सर्वेक्षण व अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया। उपकरण के रूप में प्रष्नावली का प्रयोग किया गया। जिससे १० वैकल्पिक प्रष्नों को शामिल किया गया था। इन प्रष्नों को शोध उद्देष्यों की ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। निष्कर्ष में ज्ञात हुआ कि पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं के प्रसार में सोषल मीडियाका गुणात्मक उपयोग किया जा सकता है।

सिंह, विजय (२०२०) ने पुस्तकालय में संदर्भ सेवाएं वर्तमान परिप्रेक्ष्यों में उपयोगी नामक शीर्षक पर अपना शोधकार्य पूर्ण किया। शोधकार्य हेतु इन्होंने अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया। साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली का प्रयोग उपकरण के रूप में किया, जिसमें ५ उपभागों में विभाजित २५ प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। शोध उद्देष्य के रूप में ५ उद्देष्यों का निर्धारण किया गया। निष्कर्ष में ज्ञात हुआ कि पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवाएँ अत्यंत उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध हो रही है। यह ना केवल पुस्तकालयों में कार्यरत कर्मचारीगण बल्कि षिक्षकों, विद्यार्थियों, नीतिनिर्धारिका, प्रषासकों आदि के लिये भी सार्थक एवं उपयोगी है।

वी. जलजा (२०२१) ने पुस्तकालय विज्ञान एक दृष्टि में नामक शीर्षक पर अपना शोधपत्र पूर्ण किया, जिसमें यह स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है कि पुस्तकालय की संकल्पना वर्षों पुरानी है, जो नित्य नवीन प्रगति का अनुसरण करते हुये उन्नत और वैज्ञानिक स्वरूप में हम सभी के समक्ष विद्यमान है। पुस्तकालय आज शैक्षिक क्रियाकलाप से जुड़े हुये हर व्यक्ति की मूलभूत आवष्यकता के रूप में जुड़ी हुई है। हम बिना पुस्तकालय के किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया का क्रियान्वयन सकुषल सुनिष्चित नहीं कर सकते हैं।

अध्ययन का उद्देष्य : प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निम्नलिखित शोध उद्देष्यों का निर्धारण किया गया है –

१. स्नातक स्तर शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
२. स्नातक स्तर की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध कार्य की परिकल्पना : प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैं

१. स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
२. स्नातक स्तर की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- **शोध उपकरण–** प्रस्तुत शोधकार्य के लिये शोद्यार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण के रूप में प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है।
- **शोध की विधि** –शोद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।
- **जनसंख्या** –प्रस्तुत शोधकार्य में पटियाला शहर को शोधकार्य की जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया।
- **सांख्यिकीय विधियाँ** –प्रस्तुत शोधकार्य में सांख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, मानक एवं क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विष्लेषण एवं व्याख्या :

अनुसंधान कार्य के उद्देष्यों एवं परिकल्पनाओं के आधार पर प्राप्त आँकड़ों का विष्लेषण अद्योलिखित के रूप में किया गया है –

तालिका संख्या – १

छात्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
शहरी छात्र	२५	४७.७८	५.८२	३.०१
ग्रामीण छात्र	२५	५०.७६	१८.१६	३.०१

प्रस्तुत शोध कार्य में स्नातक स्तर के शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों के मध्य पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। यह ज्ञात करने के लिये प्राप्त आँकड़ों के विष्लेषण के उपरान्त शहरी छात्रों का मध्यमान ४७.७८ तथा ग्रामीण छात्रों का मध्यमान ५०. ७६ प्राप्त हुआ तथा प्रमाणिक विचलन क्रमषः ५.८२ एवं १८.१६ प्राप्त हुआ। क्रांतिक अनुपात का मान ३.०१ प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता के स्तर ०.०५ पर मान सार्थक है। इस प्रकार दोनों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं ज्ञात हुआ–

तालिका संख्या - २				
छात्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
शहरी छात्र	२५	५७.५०	११.२१	७.६६
ग्रामीण छात्र	२५	३६.५२	६.५६	

प्रस्तुत शोध कार्य के स्नातक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता को कोई सार्थक अन्तर नहीं है। यह ज्ञात करने के लिये प्राप्त आँकड़ों के विष्लेषण के उपरान्त शहरी छात्राओं का मध्यमान ५७.५० तथा ग्रामीण छात्राओं का मध्यमान ३६.५२ प्राप्त हुआ तथा प्रमाणिक विचलन क्रमषः ११.२१ एवं ६.५६ प्राप्त हुआ। क्रांतिक अनुपात का मान ७.६६ प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता का स्तर ०.०५ पर मान सार्थक है। इस प्रकार दोनों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं ज्ञात हुआ।

निष्कर्ष :

शोध कार्य के द्वारा नवीन ज्ञान की खोज की जाती है साथ ही साथ पूर्व ज्ञान अथवा तथ्यों को प्रभावित करने के साथ-साथ स्थापित करने का भी कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्त आँकड़ों के विष्लेषण एवं व्याख्या के उपरान्त निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

१. स्नातक स्तर के शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों की पुस्तकालय विज्ञान के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ।
२. स्नातक स्तर की शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं की पुस्तकालय विज्ञान की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ।

संदर्भ :

१. शास्त्री अनुज (२०२०) : पुस्तकालय पद्धति सैद्धांतिक और व्यवहारिक, पटना, बिहार ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ संख्या ५-७।
२. शर्मा वी.के. (२०२१) : ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान, आगरा वाई.के. पब्लिसर्ष, पृष्ठ संख्या २३।
३. पाण्डेय, एस.के. शर्मा. पुस्तकालय और समाज, नई दिल्ली, ग्रंथ अकादमी, १६६५।
४. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शब्दावली : वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर षिक्षा विभाग) भारत सरकार।
५. गौतम जे.एन. व अन्य (२००८) : ज्ञान का संगठन एवं शोध पद्धति, कोटा वर्धमान महावीर खुला विष्वविद्यालय, पृष्ठ संख्या ८८, १०८, १३०, १४०-१४१।